स्टेम कोशिकाओं से घोड़ों का इलाज

वैसे तो जब से कोरियाई वैज्ञानिकों की धोखाधड़ी का मामला सामने आया है, तब से स्टेम कोशिका आधारित उपचार की बातें थोड़ी दबी ज़ुबान में ही हो रही हैं। मगर खबर है कि रेस के घोड़ों की चोटों की मरम्मत के लिए स्टेम कोशिकाओं का उपयोग सफलतापूर्वक किया गया है। गौरतलब है कि स्टेम कोशिकाएं हमारे शरीर की ऐसी कोशिकाएं हैं जिनकी भूमिका अभी निर्धारित नहीं हुई है। अर्थात इनका विभेदन नहीं हुआ है।

स्टेम कोशिकाओं का उपयोग रेस के घोड़ों की कण्डराओं में होने वाली चोट के इलाज के लिए किया गया है। कण्डरा वह भाग होता है जो मांसपेशियों को हड्डियों से जोड़ता है और उन्हें हिलाने डुलाने में मददगार हाता ह। कण्डरा की चोट रेस के घोड़ों में काफी आम बात होती है और कुल चोटों में से एक-तिहाई ऐसी ही चोटें होती हैं।

इंग्लैण्ड के रॉयल वेटर्नरी कॉलेज के रॉजर स्मिथ व उनके साथियों द्वारा किए गए शोध से काफी आशाजनक परिणाम मिले हैं। इनके द्वारा विकसित तरीके में उसी घोड़े की अस्थि मज्जा में से स्टेम कोशिकाएं प्राप्त की जाती हैं। इस काम के लिए पसलियों को जोड़ने वाली हड्डी स्टर्नम सबसे उपयुक्त होती है। इन स्टेम कोशिकाओं को प्रयोगशाला में संवर्धित किया जाता है और काफी संख्या हो जाने पर चोटग्रस्त भाग में इंजेक्ट कर दिया जाता है। चोटग्रस्त भाग में ये चोट के कारण पैदा हुई दरारों में वृद्धि करके उसे भर देती हैं।

अब तक कुल 82 घोड़ों का इलाज इस तरीके से किया गया है। इनमें से 80 वापिस घुड़दौड़ में भाग ले पाए हैं। इस आंकड़े का महत्व यह है कि सामान्य पारम्परिक इलाज के बाद मात्र 30 प्रतिशत घोड़े ही वापिस रेस कोर्स पर पहुंच पाते हैं। पारम्परिक इलाज में जहां 18 महीने का वक्त लगता है, वहीं स्टेम कोशिका आधारित इलाज में मात्र 12 माह लगते हैं।

स्टेम कोशिका आधारित इलाज की एक और विशेषता यह है कि जब घोड़ा वापिस दौड़ने लगता है तो उसे उसी भाग में फिर से चोट लगने की आशंका काफी कम होती है।

अब रॉजर स्मिथ 130 और घोड़ों का इलाज कर रहे हैं। इसके अलावा, इस इलाज के बेहतर होने का प्रमाण प्राप्त करने के लिए 32 घोड़ों पर विशेष परीक्षण भी किए जा रहे हैं।

घोड़ों के मालिक इस इलाज से काफी खुश हैं क्योंकि उनके घोड़े जल्दी फिर से दौड़ने लगते हैं और जहां तक घुड़दौड़ का सवाल है, यह अरबों का कारोबार है।

एक बात यह भी है कि घोड़ों पर सफल प्रयोग के बाद आशा जगी है कि शायद जल्दी ही इन्सान भी इस इलाज से लाभान्वित होंगे। ऐसा माना जा रहा है कि कंधे व एड़ी की कण्डरा में चोट का इलाज इस तरीके से हो सकेगा। ***(स्रोत फीचर्स)***